अध्याय – 01 (सूरदास) जन्मः– संवत् 1540– निधन :–1620 (कक्षा 10)

कवि परिचय –

कृष्ण भक्त कवि सूरदास का जन्म संवत् 1540 में हुआ था। इनका जन्म स्थान आगरा और मथुरा के बीच स्थित ''रूनकता'' ग्राम माना जाता है। कुछ विद्वान दिल्ली के निकट ''सीही'' ग्राम को इनकी जन्मस्थली मानते हैं। इनके पिता का नाम रामदास बताया जाता है। वार्त्ता–साहित्य और भक्तमाल के आधार पर ये सारस्वत ब्राह्ाण कहे गए किन्तु 'साहित्य लहरी' में एक पद हैं जिससे ये पृथ्वीराज के अमात्य तथा राजकवि चन्दवरदाई के वंशज ब्रह्माभट्ट मालूम होते हैं।इस पद से बहुत सी बातें ज्ञात होती हैं। इसी पद के आधाार पर कहा जाता है कि ये नेत्रहीन होने के कारण एक अन्धकूप में गिर पडे थें।छह दिन वहाँ पडे रहने के बाद भगवान श्री कृष्ण ने इन्हें दर्शन दिए और सनेत्र कर दिया। इस पर सूरदास ने कहा– '' प्रभु जिन नेत्रों से आपके दर्शन हुए, अब उनसे मैं सांसारिक पापों को नहीं देखना चाहता ।'' उनके निवेदन से नेत्र सदा के लिए बन्द हो गए लेकिन उन्हें प्रज्ञा–चक्षु प्राप्त हो गए।

सूरदास जन्म से अन्धे थे – यह विवादास्पद हैं। इस सम्बन्ध में अधिकांश विद्वानों का मत है कि वे जीवन के अंतिम समय में अंधे हुए थें, क्योंकि इसका प्रमाण हमें इनके पदों से मिल जाता है:–

'' या माया झूठी की लालच दुहुँ दृग अंध भयौ।।''

आचार्य वल्लभ ने अपने सिद्धान्तों में सूरदास को दीक्षित किया और उसी समय से उनकी दास्य भाव की भक्ति सख्य भाव में परिणत हो गई। अपने गुरू वल्लभाचार्य की आज्ञानुसार इन्होंने ईश्वर की कथा को भाषा में वर्णन करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया। सूरदास की उपलब्ध रचनाएँ तीन हैं– सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर सारावली। सूरसागर इनका प्रामाणिक ,अत्युत्तम एवं श्रेष्ठ काव्य ग्रन्थ है जो इनकी कीर्ति को अक्षय रखने के लिए पर्याप्त है। सूरदास ने ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। इनके पूर्ववर्ती किसी भी कवि की भाषा में काव्य छटा न तो इतनी साहित्यिक है और न इतनी सौन्दर्यपूर्ण।

पाठ–परिचय –

प्रस्तावित पहले पद में कृष्ण और राधिका के प्रथम मिलन का वर्णन है। अपरिचय की दीवार कृष्ण के पहल से समाप्त होती है। राधिका बहुत चतुराई से कृष्ण की खुबियों एवं खामियों को व्याज–स्तुति में कह जाती है। अन्ततः कृष्ण, राधिका को संग खेलने के लिए आमंत्रित करते है। शेष तीन पदों में उद्धव और गोपिकाओं के संवाद है। इसे भ्रमरगीत के रूप में जाना जाता है। भ्रमरगीत हिन्दी साहित्य में अनुपम हैं। उद्धव निर्गुण ब्रह्म के प्रवक्ता के रूप में गोकुल आते है।

किन्तु कृष्ण के सम्मोहन में डुबी गोपियों के विचार सुनकर उद्धव जी निरूत्तर हो जाते हैं। गोपिकाओं के उपालंभ विदग्धता और करूणा से भरे हैं। गोपियों के व्यंग्य बाणों से उद्धव का हृदय छलनी हो जाता है और वे स्वयं कृष्णमय हो जाते है। आस्था के समक्ष उद्धव के सिद्धान्त फीके पड जाते हैं। प्रस्तावित समस्त पद गेय है।

पद

(1)

बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहती काकी है बेटी, देखी नहीं कबहूँ ब्रज–खोरी।।
काहे को हम ब्रज–तन आवतिं, खेलत रहतिं आपनी पोरी।
सुनत रहतिं स्रवननि नंद ढोटा, करत फिरत माखन दधि चोरी।।
तुम्हरो कहा चोरि हम लैहें, खेलन चलो संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि, बातनि भुरई राधिका भोरी।।

<u>कठिन शब्दार्थ</u> – बूझत– पूछते हैं। गोरी– युवती। खोरी– गली। ब्रज–तन– ब्रज की ओर। पोरी– बरामदा, पौली। स्रवननि–कानों से । नदं ढोटा– नंद के पुत्र (कृष्ण) । दधि– दही। मिलि जोरी– जोडी बनाकर। रसिक सिरोमनि– रस पूर्ण बातों मे बहुत चतुर। बातनि– बातों के द्वारा। भुरई–बहका ली, राजी करली। <u>भोरी– भौली, सीधी सादी।</u>

<u>संदर्भ व प्रसग</u> :– प्रस्तुत पद कवि सूरदास द्वारा रचित हैं, यह उनकी अमर कृति सूरसागर में संकलित है। इस पद में कृष्ण भोली राधा को साथ खेलने चलने को प्रेरित करते हैं।

व्याख्या– एक दिन अचानक ब्रज की गली में कृष्ण की राधा से भेंट हो जाती है। वह उससे उसका परिचय पूछते हैं। हें सुन्दरी तुम कौन हो! तुम कहाँ रहती हो ? तुम किसकी बेटी हो ?

हमने इससे पहले तुम्हें ब्रज की गलियों में नहीं देखा। राधा उत्तर देती है– भला हमें ब्रज में आने की क्या आवश्यकता हैं । मैं तो अपने द्वार पर ही खेलती रहती हूँ। हाँ कानों से यह अवश्य सुनती रहती हूँ की कोई नंद जी का लडका मक्खन और दही की चोरी करता फिरता है। कृष्ण ने कहा हम चोर ही सही ,पर हम तुम्हारा क्या चुरा लेगें, आओं! साथ साथ खेलने चलते है। सूरदास कहते है कि उनके प्रभू श्री कृष्ण बडे रसिक हैं, उनकों मिठी मिठी बातें बनाना खूब आता है, उन्होंने भोली भाली राधा को भी अपनी बातों में बहका लिया और दोनों साथ साथ खेलने चल दिए।

<u>विशेष–</u>

1. पद की भाषा सरस व सरल ब्रज भाषा है।

2. शैली संवादपरक हैं।कवि ने कृष्ण को रसिक शिरोमणि बता कर मधुर व्यंग्य किया है।

3. राधा और कृष्ण के संवादों में उनकी आयु के अनुरूप सहज वार्तालाप के दर्शन होते है।

(2)

मधुकर स्याम हमारे चोर।
मन हरि लियौ तनक चितवनि मैं, चपल नैन की कोर।।
पकरे हुते ह्रदय उर अंतर, प्रेम प्रीति कैं जोर।
गए छँडाइ तोरि सब बंधन , दै गए हँसनि अँकोर।।
चौंकि परी जागत निसि बीती, दूत मिल्यौ इक भौंर।
सूरदास प्रभु सरबस लूटयौ, नागर नवल किसोर।।

शब्दार्थ– मधुकर– भौंरा। हरि लियौ– चुरा लिया। तनक –थोडी सी। चितवनि– दृष्टि । चपल–चंचल। नैन– नेत्र। कोर–कोना। पकरे हुते– पकड रखे थे। जोर– बल पर। छँडाइ– छुडाकर। हँसनि– हँसी। अँकोर– मूल्य,रिश्वत। निसि–रात। भौंर–भौंरा। सरबस–सब कुछ। नागर–चतुर। नवल किसोर– कृष्ण।

संदर्भ व प्रसंग– प्रस्तुत पद महाकवि सूरदास की रचना है यह उनके द्वारा रचित सूरसागर महाकाव्य के भ्रमर गीत प्रसंग से संकलित है। इस पद में गोपियाँ कृष्ण के कपट पूर्ण व्यवहार पर व्यंग्य कर रही है।

व्याख्याः–गोपियाँ उद्धव से वार्तालाप के समय कहीं से आकर मँडराने वाले भौंरे को कृष्ण का प्रतीक बनाकर उन पर कपट करने का आरोप लगाते हुए कह रही है । अरे! भौंरे तुम्हारे जैसे ही श्याम रंग वाले वह कृष्ण हमारे चोर है। उन्होनें अपने चंचल नैत्रों के कोनों से अपनी तनिक सी दृष्टि डालकर हमारे मन को चुरा लिया । हमने अपनी प्रीति ओर अनुराग के बल पर उन्हें अपने हद्य में बंदी बना लिया था। उनके प्रेम पर विश्वास करके उनकों अपने हद्य में बसा लिया था। किन्तु वह हमारे प्रेम के सारे बंधनों को तोडकर निकल गये। वह अपनी मनमोहनी हंसी रूपी रिश्वत देकर हमें असावधान बना कर हमारे हद्य में प्रेम बंधनों को तोडकर चले गये। इस चोरी और कपट का पता चलते ही हम लोग चौंक कर जाग पडी । हमारी सारी रात जागते ही बीती , फिर हमें उनका एक दूत भौंरा (उद्धव) मिला उसने अपने योग के संदशों से हम लोगों को बहुत दुःखी किया । उस चतुर नवल किशोर ने हमारा सब कुछ लुट कर हमें वियोग की ज्वाला में जलते रहने को छोड दिया।

विशेष–

1. भाषा में लक्षणा शक्ति और व्यंग्य का सौन्दर्य है।
2. शैली प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक है।
3. कोमल भावनाओं और वियोग वेदना की अभिव्यक्ति हुई है।
4. अनुप्रास तथा रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(3)

संदेसनि मधुबन कूप भरे।
अपने तो पठवत नहीं मोहन, हमरे फिरि न फिरे।।
जिते पथिक पठए मधुबन कौं, बहुरि न सोध करे।
कै वै स्याम सिखाइ प्रमोधे, कै कहुँ बीच मरे।
कागद गरे मेघ, मसि खूटी, सर दव लागि जरे।।
सेवक सूर लिखन कौ आंधौ, पलक कपाट अरे।।

शब्दार्थ–संदेसनि–संदेशों सें।मधुबन–मथुरा।कूप–कुएँ।पठवत–भेजते।फिरि–इसके बाद। न फिरें–नही लौटे। जिते– जितने। पथिक–मथुरा जाने वाले यात्री।पठए–भेजे। बहुरि– फिरि।सोध–खोज,सुध।प्रमोधे–वश में कर लिए।

सिखाइ–बहकाकर,सिखाकर। कागद–कागज। गरे–गल गए। मेघ–वर्षा(से)। मसि–स्याही। खूटी–समाप्त हो गई। सर–सरकंडे, जिससे कलम बनाई जाती है। दव–दावानल,वन में लग जाने वाली आग। जरे–जल गए। सेवक–लिखने वाला नौकर या कर्मचारी। आंधौ–अंधा। कपाट –किवाड। अरे–अडे हुए, बंद।

संदर्भ तथा प्रसंगः– प्रस्तुत पद कवि सूरदास के सूरसागर काव्यग्रन्थ में संकलित है। यह 'भ्रमरगीत'नामक प्रसंग से लिया गया है। इस पद में गोपियाँ मथुरा में स्थित श्रीकृष्ण को अपने द्वारा भिजवाए गए संदेशों का उत्तर न मिलने पर ,चुटीले व्यंग्य बाण चला रही है।

व्याख्याः–गोपियाँ श्रीकृष्ण के उपेक्षापूर्ण व्यवहार पर चोट करते हुए कह रही हैं कि उन्होंने अब तक इतने संदेश श्रीकृष्ण के पास भिजवाए हैं कि उनसे मथुरा के सारे कुएँ भर गए होंगे। मथुरा के जन–जन को हमारे संदेशों का पता चल गया होगा। श्रीकृष्ण जान बूझकर हमारी उपेक्षा कर रहे हैं। वे अपने संदेश तो भेजते ही नहीं। हमारे द्वारा संदेश ले गए लोग भी इधर लौटकर नहीं आए।ऐसा लगता है कि कृष्ण ने उनको सिखाकर (बहकाकर) अपने साथ मिला लिया है। लौटकर नहीं आने दिया है या फिर वे बेचारे कहीं बीच में ही मर गए। यदि ऐसा न होता तो वे अवश्य लौटकर आए होते। ऐसा भी हो सकता है कि मथुरा के सारे कागज वर्षा में भीगकर गल गए हों या फिर वहाँ की सारी स्याही ही समाप्त हो गई हों? हो सकता है वहाँ कलम बनाने के लिए काम आने वाले सरकंडे ही वन की आग में जलकर भस्म हो गए हों। यह भी हो सकता हैं कि कृष्ण का पत्रों का उत्तर लिखने वाला सेवक ही अंधा हो गया हो। उसके नेत्रों के पलक रूपी किवाड ही न खुल पा रहे हों। इनमें से कोई न कोई कारण अवश्य रहा होगा, तभी हमारे संदेशों का उत्तर हमें अब तक नहीं मिला।

विशेषः–

1. पद की एक एक पंक्ति गोपियों के आक्रोश और व्यंग्य प्रहार से भरी हुई है।
2. गोपियों को विश्वास हो गया है कि वे प्रेम के नाम पर कृष्ण द्वारा छली गई है।
3. स्याम सिखाइ तथा मेघ मसि, पलक कपाट में रूपक और पूरे पद में संदेह अलंकार है।

(4)

ऊधौ मन माने की बात।
दाख छुहारा छांडि अमृत फल, बिषकीरा बिष खात।।
ज्यों चकोर कों देंई कपूर कोउ, तजि अंगार अघात।
मधुप करत घर फोरि काठ मैं, बंधत कमल के पात।।
ज्यौं पतंग हित जानि आपनो, दीपक सौं लपटात।
सूरदास जाकौ मन जासौ, सोई ताहि सुहात।।

शब्दार्थ :– ऊधौ–उद्धव,कृष्ण के मित्र जो गोपियों को समझाने आए थे। मन माने– मन को अच्छा लगना। दाख– अंगूर। छुहारा–एक प्रकार का मेवा। विष–जहर।विषकीरा–एक ऐसा कीडा जो विष खाता है। चकोर–एक पक्षी जिसका अंगारे खाना प्रिय माना गया है। मधुप–भौंरा। फोरि–छेद करके। काठ –लकडी।पात–बंधन, कमल के फूल का संपुट।पतंग–दीपक के पास मँडराने वाला और लौ में जल जाने वाला कीट। लपटात–लिपटता है। सोई–वहीं। सुहात–सुहाता है, प्रिय लगता है।

संदर्भ तथा प्रसंगः– प्रस्तुत पद कवि सूरदास जी द्वारा रचित है। यह उनके काव्यग्रन्थ'सूरदास' से संकलित है। यह सूरसागर के भ्रमरगीत से लिया गया है।

व्याख्याः– उद्धव द्वारा कृष्ण को भुलाकर योग साधना करने का उपदेश दिए जाने पर, गोपियाँ कह रही हैं – हे उद्धव! कृष्ण जैसे भी हैं, हमें प्रिय है। यह तो मन के मानने की बात है। जिससे मन लग जाय वहीं व्यारा लगता है। उसे व्यक्ति कष्ट पाकर भी प्रेम करता है, अपनाता है। गोपियाँ कहती है कि संसार में अंगूर और छोहारा जैसे अमृत के समान मधुर फल हैं

किन्तु विष का कीट इन सबको ठुकराकर विष को ही खाता है। उसका मन विष में लगा हुआ है।चाहे चकोर को कोई सुगंधित और शीतल कपूर चुगाए पर वह उसे त्यागकर झुलसा देने वाले अंगारे को ही खाता है। भौंरा अपना घर बनाने के लिए कठोर काठ में भी छेद कर देता है किन्तु वहीं कमल की कोमल पँखुडियों के बीच बंद हो जाता है। उसे काटकर बाहर नहीं निकलता। इसी प्रकार दीपक से प्रेम करने वाला पंतगा दीपक की लौ से लिपटने में ही अपनी भलाई मानकर उसमें भस्म हो जाता है। बात वहीं है कि जिससे जिसका मन लगा होता है ,उसे वहीं सुहाता है।हमारा मन श्रीकृष्ण से लगा है।हमें वहीं सुहाते हैं। आपके योग को स्वीकार कर पाना हमारे वश की बात नहीं।

विशेषः–

1. **सरस ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।शैली भावात्मक है।**
2. **उद्धव के उपदेशों और तर्कों का गोपियों ने अपनी प्रेम विवशता से नम्रतापूर्ण खंडन किया है।**
3. **अनुप्रास, उदाहरण, दृष्टांत आदि अलंकार है। वियोग श्रृंगार रस की रचना है।**

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 'दूत मिल्यौ एक भौर' से आशय है'
   (क) भँवरा (ख) राधा (ग) गोपिकाएँ (घ) उद्धव√
2. 'नागर नवल किसोर' विशेषण किसके लिए आया हैः–
   (क) उद्धव (ख) गोप (ग) कृष्ण√ (घ) श्यामा

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

3. कृष्ण 'गोरी' संबोधन किसके लिए कर रहे हैं?
   उ0–कृष्ण 'गोरी' सम्बोधन राधा के लिए कर रहें हैं।
4. सारे बंधन तोड कर कौन कहाँ चला गया हैं ?
   उ0–सारे प्रेम के बंधन तोडकर श्रीकृष्ण मथुरा चले गए हैं।
5. गोपियों को भ्रमर के रूप में कौन–सा दूत मिला ?
   उ0–गोपियों को भ्रमर के रूप में उद्धव मिले जो श्री कृष्ण के दूत या संदेशवाहक के रूप में आए थे।
6. श्याम ने किसको सिखाकर वश में कर लिया ?
   उ0– श्याम ने गोपियों का संदेश लेकर जाने वाले पथिकों को सिखाकर अपने वश में कर लिया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

7. कृष्ण ने भोली राधा को बातो में कैसे उलझा लिया ?
   उ0– राधा कृष्ण को पहली बार ब्रज की गली में मिली। उन्होनें पहले उससे उसका परिचय पूछा। और फिर कहा तुम्हें ब्रज की गली में कभी नहीं देखा। राधा ने उपेक्षा करते हुए उत्तर दिया की उसे ब्रज में आने की क्या आवश्यकता है? वह तो अपने द्वार पर ही खेला करती है।राधा ने कहा की उसने सुना है नंद का पुत्र दही और मक्खन चुराता रहता है। तब श्रीकृष्ण ने मीठे स्वर में कहा की वह उसका क्या चुरा लेंगे। और उसे साथ मिलकर खेलने चलने को राजी कर लिया। इस प्रकार उन्होंने भौली राधा को बातों में उलझा कर उनका मन जीत लिया।

HINDI (CLASS XI)

8. कृष्ण ने एक झलक में ही गोपियों का मन कैसे वश में कर लिया ?

उ0– कृष्ण ने अपने चंचल नेत्रों की कनखियों से जरा देख कर ही गोपियों के मन कों वश में कर लिया। वह उनके हद्य में प्रेम की शक्ति के बल से बस गए। कृष्ण के द्वारा मधूर मुस्कान के साथ मन मोहनी चितवन से देखते ही गोपियाँ उनके प्रेम के वशीभूत हो गई।

9. मथुरा के कुएँ संदेसों से कैसे भर गए ?

उ0– गोपियाँ जिसे भी मथुरा की ओर जाता हुआ देखती थी। उसी के हाथों अपने संदेश कृष्ण के पास भेजती रहती थी। श्रीकृष्ण अपनी ओर से तो कोई संदेश भेजते ही नहीं थे। और गोपियों के संदेश लाने वालों को भी बहला कर रोक देते थे। लगता है वे गोपियों के संदेशों को उपेक्षा के साथ कुओं में फिकवा देते थे। इससे वहां के कुए संदेशों से भर गए अथवा गोपियों ने इतने संदेश भिजवाए की कुओं का जल लेने जाने वाली मथुरा की नारियों में उनकी ही चर्चा होने लगी। मथुरा की नारियाँ कुओं से रोज नया संदेश लेकर घर पहुँचने लगी।

10. 'तजि अंगार अघात' से क्या तात्पर्य है ?

उ0– जिससे जिसका मन लगता है उससे वहीं सुहाता है। चकोर पक्षी के बारे में कहा जाता है कि वह या तो चन्द्रमा की किरणों को चुगता है या फिर अंगारों की चिनगारीयों से पेट भरता है।उसे कोई सुगन्धित और शीतल कपूर देता है तो वह उसे त्याग कर अंगारे से ही अपनी भूख शान्त करता है। इसी प्रकार गोपियों का कहना है कि उनका मन श्रीकृष्ण के प्रेम बंधन में बंधा है। वे उन्हें त्याग कर योग को नहीं अपना सकती। कृष्ण जैसे भी है, उनकों वहीं प्रिय लगते है।

निबंधात्मक :–

11. कृष्ण एवं राधा की प्रथम भेंट को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए ?
12. गोपियाँ कृष्ण को चोर क्यों सिद्ध कर रहीं हैं ? विस्तारपूर्वक लिखिए।
13. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) संदेसनि मधुबन कूप भरे.....सेवक सूर लिखन कौ आंधौ, पलक कपाट अरें।।

उ0 पंद्याश (3) को पढें।

(ख) ऊधौ मन माने की बात.....सूरदास जाकौ मन जासौ, सोई ताहि सुहात।।

उ0 पंद्याश (4) को पढें।

HINDI CLASS XI